www.samanway.in
+91 99792 88855
@samanwaypratishthan
@samanwaypratishthan
@samanwaytrust
samanwaypratishthan@gmail.com
404, Rajanigandha Appartments Tower A, Behind Hyundai Showroom, Diwalipura, Court Road, Vadodara.

समन्वय
પ્રતિષ્ઠાન

सम्यक् विचार | सम्यक् प्रयोग | सम्यक् प्रयास

समन्वय प्रतिष्ठान

सम्यक विचार - सम्यक प्रयोग - सम्यक प्रयास

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः। समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति॥

(ऋगवेद १०.१९१.४)

(हमारा उद्देश्य एक हो, हमारी भावना सुसंगत हो। हमारे विचार एकत्रित हो, जैसे इस विश्व में सब कुछ एक है ।)

- ऋगवेद 10.191.4

समन्वय प्रतिष्ठान योग्य विचार,योग्य आचार तथा योग्य प्रयासों के माध्यम से समग्र समाज को प्रगति के उच्च शिखर पर ले जाने के लिए प्रतिबद्ध है। समन्वय प्रतिष्ठान किसी जाति, धर्म, भाषा अथवा स्थान के भेदभाव के बिना संपूर्ण मानव जाति के कल्याण के लिए कटिबद्ध है।

समन्वय प्रतिष्ठान वडोदरा स्थित चैरिटी कमिश्नर कार्यालय में F/2684/Vadodara नंबर के तहत पंजीकृत किया गया है और यह 80G तथा 12A प्रमाणपत्रों से मान्यता प्राप्त है।

यह संगठन का प्रबंधन सामूहिक रूप से उसके ट्रस्टीज़, संचालन समिति और समर्पित स्वयंसेवकों द्वारा किया जाएगा। यह स्वयंसेवक संपूर्ण समाज के सर्वांगीण विकास के लिए अपनी अनुकूलता अनुसार पूर्ण समय- अल्प समय के लिये स्वैच्छिक सेवाएं प्रदान करते है। भविष्य की परियोजनाओं के लिए यह संगठन विविध विषय के शोधकर्ताओं को एकीकृत करने की और विषय विशेषज्ञ को इस काम में जुड़े ऐसी योजना बना रहा है।

विविध प्रकार की ग्यारह अनोखी पहल यहां प्रस्तावित की गयी है, जो "समन्वय प्रतिष्ठान" के सदस्यों के माध्यम से कार्यान्वित किये जायेंगे। यह प्रकल्प निस्वार्थता एवं करुणा के मूल्यों को चित्रित करते हुए संपूर्ण समाज में जीव मात्र के प्रति औदार्य के निदर्शन का एक विनम्र प्रयास है।

संवाद

वाण्येका समलंकरोति पुरुषंया संस्कृता धार्यते
क्षीयते खलु भूषणानिसततं वाग्भूषणं भूषणम् ।।

(कंगन मनुष्य की शोभा नहीं बढ़ाते, न ही चन्द्रमा की तरह चमकते हार, न ही सुगन्धित जल से स्नान ; देह पर सुगन्धित उबटन लगाने से भी मनुष्य की शोभा नहीं बढ़ती और न ही फूलों से सजे बाल ही मनुष्य की शोभा बढ़ाते हैं। केवल सुसंस्कृत और सुसज्जित वाणी ही मनुष्य की शोभा बढाती है।)

संवाद के द्वारा देश-विदेश के अनेक विषयों पर वक्तव्य, कार्यशाला, चर्चासभा एवं प्रदर्शनी का आयोजन किया जाएगा। इस प्रयोग के माध्यम से देश-विदेश के समान मानसिकता के विचारशील व्यक्तियों के मध्य विचारों का आदान प्रदान तथा अर्थपूर्ण संवाद संभव हो सकेगा।

सृष्टि

सर्वेषां यः सुहद् नित्यं सर्वेषां हिते रताः। महा. शा. 25.9.17
श्रान्त स्वाहा रोग परिचर्या सुरार्चनम्।
रोगास्तेषु यद्दाति तत्स्याद् बहु मतं धनम्।।

(रोगी एवं दिव्यांग की सहायता करने के लिए जो धन दिया जाता है, उसका उत्तम फल प्राप्त होता है।)

जो आंखों से देखी तथा शरीर से महसूस की जाती है, वही "सृष्टि" है। जिनके जीवन में काले रंग के सिवाय कोई रंग नहीं है, उनके जीवन में हमारे मृत्यु के पश्चात नेत्रदान के माध्यम से रंग भरने का संकल्प करें। हमारे अंग किसी को नया जीवन प्रदान कर सकें, इसके लिए हमारे मृत्यु के पश्चात अंगदान करने का संकल्प करें। "सृष्टि" द्वारा नियमित रक्तदान शिविर का आयोजन, नेत्रदान, अंगदान तथा देहदान को एक अभियान का स्वरूप प्रदान करके समाज की परमार्थ की भावना को सुदृढ़ करने का विनम्र प्रयास है।

संवेदना

स्वजनं तर्ययित्वा यः शेषभोजी सोऽमृत्भोजि (चाणक्य)

(नागरिकों तथा रिश्तेदारों को संतुष्ट करने से अमृत के स्वाद की अनुभूति होती है ।
- चाणक्य)

संवेदना के माध्यम से सरकारी अस्पताल में भर्ती मरीजों और उनके रिश्तेदारों को सही मार्गदर्शन उपलब्ध कराया जाएगा। अस्पताल के प्रशासन के साथ योग्य संवाद के माध्यम से, रोगियों के विविध प्रश्नों तथा समस्याओं का समाधान किया जाएगा। इस प्रयोग का शुभारंभ वडोदरा स्थित सर सयाजीराव जनरल अस्पताल में किया जाएगा।

संस्कृति

अयंनिजःपरोवेतिगणनालघुचेतसाम् |
उदारचरितानांतुवसुधैवकुटुम्बकम् ||
(पञ्चतन्त्रम्, पंचमतंत्र, "अपरीक्षितकारकम्)

(सदैव प्रसन्न-वदन (हँसमुख), हृदय में दया की भावना रखने वाले, अमृत के समान मीठे वचन बोलने वाले तथा परोपकार में लिप्त रहने वाले व्यक्ति भला किसके लिए वन्दनीय नहीं होगा।)

"स्वीकार" अर्पण करने तथा स्वीकार करने के मध्य सेतु का काम करेगा। अगर हमारे दैनिक जीवन में यदि कोई वस्तु हमे उपयोग के योग्य नहीं लगती तो उसको समाज में जिन्हें ज़रूरत हो, उन्हें अर्पण करना तथा योग्य स्थिति में लाकर जरूरतमंद लोगों तक यह वस्तुए पहुंचाने में ये प्रयोग निमित्त बनेगा।

स्वीकार

वदनं प्रसादसदनं सदयं हृदयं सुधामुचो वाचः।
करणं परोपकरणं येषां केषां न ते वन्द्याः।।

(सदैव प्रसन्न-वदन (हँसमुख), हृदय में दया की भावना रखने वाले, अमृत के समान मीठे वचन बोलने वाले तथा परोपकार में लिप्त रहने वाले व्यक्ति भला किसके लिए वन्दनीय नहीं होगा।)

"स्वीकार" अर्पण करने तथा स्वीकार करने के मध्य सेतु का काम करेगा। अगर हमारे दैनिक जीवन में यदि कोई वस्तु हमे उपयोग के योग्य नहीं लगती तो उसको समाज में जिन्हें ज़रूरत हो, उन्हें अर्पण करना तथा योग्य स्थिति में लाकर जरूरतमंद लोगों तक यह वस्तुए पहुंचाने में ये प्रयोग निमित्त बनेगा।

स्पर्श

विध्याभ्यासे गृहकृत्ये तावु भौ योजयेत क्रमात (शुक्र 3/99)

(वीध्याअभ्यास एवं अन्य कार्यों में योग्य मार्गदर्शन प्रदान करना सबसे पवित्र कार्य माना जाता है।) - शुक्र ३/९९

"स्पर्श" के माध्यम से समाज के सबसे वंचित-शोषित वर्ग के बच्चों की शिक्षा की जिम्मेदारी ली जाएगी तथा उनको आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में प्रयास किया जाएगा। आर्थिक रूप से कमजोर, श्रमजीवियों के बच्चे तथा अनाथ बच्चों की शिक्षा के लिए संपूर्ण तंत्र विकसित करने के उद्देश्य के साथ इस परियोजना पर कार्य किया जाएगा।

शब्द

सत्यं वद। धर्मं चर। स्वाध्यायान्मा प्रमदः। तैत्तिरीय उपनिषद् 1.11.1

(सत्य बोलो, धर्म का आचरण करो, स्वाध्याय में आलस्य मत करो। अपने श्रेष्ठ कर्मों से साधक को कभी मन नहीं चुराना चाहिए।)

एक शब्द में सदियों का ज्ञान समाया होता है। भारतीय इतिहास, तत्वज्ञान, विविध विचारधारा, शासन-प्रशासन से संबंधित दुर्लभ पुस्तकों को एकत्रित कर एक संदर्भ पुस्तकालय को आकार दिया जाएगा।

श्रद्धा

मय्यावेश्य मनो ये मां नित्ययुक्ता उपासते |
श्रद्धया परयोपेतास्ते मे युक्ततमा मताः || भगवदगीता 12.2

(जो लोग मुझ पर अपना मन लगाते हैं और हमेशा मेरी भक्ति में दृढ़ विश्वास के साथ संलग्न होते हैं, मैं उन्हें सर्वश्रेष्ठ योगी मानता हूं।)

"पश्चिमी संस्कृति का मूल चालक तत्व भौतिकवाद है, किंतु भारतवर्ष की आत्मा उसका धर्म है।" -स्वामी विवेकानंद

"श्रद्धा" द्वारा धर्मचेतना के माध्यम से विभिन्न धार्मिक त्योहारों-उत्सवो के आयोजन द्वारा समाज में एक नई चेतना जागृत करने का प्रयास किया जाएगा तथा समाज में संस्कृति एवं रीति रिवाजों के प्रति श्रद्धा मज़बूत कर उत्सवप्रेमी प्रजा की अस्मिता को बनाए रखने की दिशा में प्रयास किया जाएगा।

सेतु

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्यवरान्नि बोधत।
क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया दुर्गं प थस्तत्कवयो वदन्ति।।

("उठो, जागो, वरिष्ठ पुरुषों को पाकर उनसे बोध प्राप्त करो। छुरी की तीक्ष्णा धार पर चलकर उसे पार करने के समान दुर्गम है यह पथ-ऐसा ऋषिगण कहते हैं।")

"सेतु" यूवाओ के जीवन के उद्देश्य की पूर्ति में सहायक तत्व की भूमिका निभाएगा। इस परियोजना के तहत युवाओं को रोजगार तथा उससे संबंधित महत्वपूर्ण योग्यता अर्जित करने में सहायता प्रदान की जाएगी।

समर्पण

यत्करोषि यदश्नासि यज्जुहोषि ददासियत्।
यत्तपस्यसि कौन्तेय तत्कुरुष्व मदर्पणम्।

(हे कुन्तीपुत्र तू जो कुछ करता है? जो कुछ खाता है? जो कुछ यज्ञ करता है? जो कुछ दान देता है और जो कुछ तप करता है? वह सब मेरे अर्पण कर दे।)

वर्तमान युग में परिवार आकार में छोटे होते जा रहे हैं , संयुक्त परिवारों का स्थान लघु परिवारों ने ले लिया है, संयुक्त परिवार मात्र विवाह की तस्वीरों तक सीमित रह गए हैं, ये दायित्व अब समाज का ही है, की वह अपने बड़े-बुजुर्ग का ध्यान रखे। "समर्पण" के माध्यम से एकाकी जीवन जीने वाले बड़े-बुजुर्ग वर्ग के लोगों के जीवन में ऊष्मा एवं विविध प्रकार की सहायता प्रदान करने का एक विनम्र प्रयास किया जाएगा।

संस्कार

सत्यंब्रूयात्प्रियंब्रूयात्, नब्रूयात्सत्यम्अप्रियम्।
प्रियंचनानृतम्ब्रूयात् ,एषधर्मःसनातनः ॥

(सत्य बोलना चाहिये, प्रिय बोलना चाहिये, सत्य किन्तु अप्रिय नहीं बोलना चाहिये । प्रिय किन्तु असत्य नहीं बोलना चाहिये ; यही सनातन धर्म है।)

"संस्कार" के माध्यम से विभिन्न प्रकार के जन जागरूकता अभियानों के माध्यम से सामाजिक जीवन में नई चेतना जगाने का प्रयास किया जाएगा। इस प्रकार के जनजागरण अभियानों के माध्यम से गहरी नींद में सो रहा समाज जागे और आत्मनिर्भर बने यही प्रयास किया जायेगा।

अंत्योदय
THE PEOPLE PROJECT

“अंत्योदय”

Uplift of the last, Uplift till the last.

पथ का अंतीम लक्ष्य नहीं, सिंहासन चढते जाना |
सब समाज को लीए साथ में आगे हे बढते जाना ||

सिंहासन पर चढ़ना पथ का लक्ष्य नहीं है।
आइए हम सभी समाज के साथ मिलकर आगे बढ़ें।

किसी भी सभ्य समाज की पहचान उस समाज के अंतिम व्यक्ति के विकास और उत्थान से होती है। समाज हाशिये पर खड़े हुए वर्ग के विकास हेतु प्रतिबद्ध और सक्रिय रहें, अंत का उदय हो, यही “अंत्योदय” का लक्ष्य है।

वर्तमान स्थिति में सरकार के पास नागरिक के जन्म से लेकर मृत्यु तक उपयोगी हो सके ऐसी योजनाएं हैं, जिसका उद्देश्य समाज के अंतिम तबके के लोगों तक पहुंचना और उनका सर्वांगीण विकास करना है। एक 'वर्चुअल' कार्यालय के माध्यम से किसी भी नागरिक को उसके जीवनकाल के सभी आवश्यक दस्तावेजों के बारे में जानकारी मिले और उन्हें प्राप्त करने के लिए सटीक मार्गदर्शन प्रदान करना इस परियोजना का प्रथम उद्देश्य है। इस 'वर्चुअल' कार्यालय के माध्यम से सरकार और विभिन्न गैर सरकारी संगठन, संस्थान और अन्य संगठनो द्वारा दी जाने वाली विभिन्न योजनाओं की जानकारी, इसका लाभ प्राप्त करने की पात्रता, इसके लिए आवश्यक दस्तावेज, उसकी प्रक्रिया, यह सारी जानकारी एक क्लिक से उपलब्ध हो जाएगी।

इसके अलावा आम जनता के सामने आने वाली छोटी-मोटी समस्याओं के समाधान के लिए 'वर्चुअल' मार्गदर्शन भी दिया जाएगा। 4g/5g तकनीक के इस युग में जब इंटरनेट विश्व के लगभग सभी भू भाग में पहुंच चुका है, तब नागरिकों को किसी भी प्रकार की योजनाओं के लाभ के लिए किसी कार्यालय के चक्कर ना काटने पड़े तथा उसका कार्य इस 'वर्चुअल' कार्यालय की एक 'वर्चुअल' विजिट से पूरा हो जाए, इसी शुभ आशय के साथ तकनीक का सदुपयोग हो, यही “अंत्योदय” का अंत्योदय की दिशा में एक विनम्र प्रयास है। नागरिक स्वयं की समस्या के समाधान हेतु आत्मनिर्भर बने तथा स्वयं के प्रश्न के निराकरण की दिशा में प्रयत्नशील हो, इस उद्देश्य के लिए अंत्योदय एक अभियान के रूप में बना रहेगा।

गुजरात थिंकर्स फेडरेशन

सहसा विदधीत न क्रियतामविवेकः परमापदां पदम् ।
वृणते हि विमृश्यकारिणं गुणलुब्धाः स्वयमेव सम्पदः
- किरातार्जुनीयम्

(अचानक आवेश में आ कर बिना सोचे समझे) कोई कार्य नहीं करना चाहिए क्योंकि विवेकशून्यता सबसे बड़ी विपत्तियों का घर होती है | (इसके विपरीत) जो व्यक्ति सोच –समझकर कार्य करता है ; गुणों से आकृष्ट होने वाली माँ लक्ष्मी स्वयं ही उसका चुनाव कर लेती है।)

गुजरात थिंकर्स फेडरेशन (GTF) एक पहल है, जिसके माध्यम से गुजरात भर के युवा एवं उद्यमी विचारकों को एक मंच पर लाकर गुजरात और देश के उज्ज्वल भविष्य के बारे में विचार-मनन-मंथन कर, एक वैचारिक मंच का निर्माण किया जा सकता है। यह वर्तमान समय की समस्याओं का व्यावहारिक समाधान खोजने की दिशा में एक प्रामाणिक प्रयास है। सूचना के इस युग में जब अर्धसत्य और भ्रम की स्थिति पैदा होती रहती है, तो GTF समाज को 'भ्रम से स्पष्टता की दिशा की ओर' ले जाने का एक निमित बनने का प्रयास करेगा।

2016 से GTF के माध्यम से कुल 4 थिंकर मीट का आयोजन किया गया है, जिसमें पूरे गुजरात के युवाओंने भाग लिया है और चर्चा-विचारणा के माध्यम से विविध समस्याओं का समाधान खोजने की कोशिश की।

यह पहल हर साल 2 दिवसीय राज्य स्तरीय मीट आयोजित करने का आह्वान करती है, इसके बाद पूरे गुजरात में जोनल स्तर (दक्षिण मध्य, उत्तर, सौराष्ट्र और कच्छ) में डेढ़ दिन की क्षेत्रीय मीट और अंत में एक दिवसीय जिला स्तर की मीट का आयोजन है। GTF के माध्यम से प्रासंगिक विषयों पर सार्वजनिक व्याख्यान आयोजित किए जाते हैं, विशेष रूप से ऐसे कार्यक्रम जो विचारकों को खोजने/तैयार करने की दिशा में उपयोगी होते हैं और जो युवाओं को वैचारिक रूप से मजबूत करके, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय विषयों एवं प्रासंगिक प्रवृत्तियों की समझ विकसित करके समस्याओं को हल करने के लिए काम कर सकते हैं। इसके अलावा GTF द्वारा राष्ट्रहित के लिए विशिष्ट लक्ष्यों पर काम कर रहे थिंक टैंक तैयार करने के लिए भी विशेष सुनियोजित प्रयास किए जाएंगे।

॥ कारण नहीं, निराकरण ॥

YUGAANTAR SOCIO-POLITICAL MOVEMENT (YSPM)

युगांतर सामाजिक-राजनैतिक अभियान

हो गई है पीर पर्वत-सी पिघलनी चाहिए,
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए।
मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही,
हो कहीं भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिए॥

भारत विश्व का सबसे युवा देश है।
देश के युवाओं में
सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र में
अपने सक्रिय योगदान से
देश-समाज को और अधिक शक्तिशाली बनाने की क्षमता है।

सामाजिक नेतृत्व के माध्यम से देश की कई समस्याओं का समाधान किया जा सकता है और सामाजिक नेतृत्व आज के समय की आवश्यकता बनती जा रही है। इसी तरह, राजनीतिक नेतृत्व में भी देश की कई राजनीतिक और सामाजिक समस्याओं का सटीक समाधान निकालने की क्षमता होती है।

कुशल और दूरदर्शी युवा नेतृत्व समाज और देश की प्रगति के लिए अपरिहार्य है। वर्तमान समय में कई मामलों में समाज सेवा एक शो या एक फैशन तक सीमित हो गई है और देश के युवा इस धारणा के कारण समाज सेवा और राजनीति से दूर रहना सही समझते हैं क्योंकि वे राजनीतिक क्षेत्र या राजनीति को गंदगी का अखाड़ा ही मानते है।

युगांतर सामाजिक-राजनीतिक अभियान (YSPM) के माध्यम से सकारात्मक और रचनात्मक गतिविधियों में युवाओं को सक्रिय रखते हुए, समाज निर्माण और राष्ट्र निर्माण के निरंतर कार्य की दिशा में यह अभियान प्रयासरत रहेगा।

॥ कारण नहीं, निराकरण ॥

"YUGAANTAR FELLOWSHIP" - A MOVEMENT TOWARDS SELFLESSNESS

स्वस्ति पन्थामनुचरेम

(ऋगवेद – ५/५१/१५)

(आइए हम कल्याण के पथ पर चलने का प्रयास करें। -ऋग्वेद - ५/५१/१५)

ऊंच-नीच, छोटे-बड़े, अमीर-गरीब के नाम पर समाज में बढ़ती खाई स्वस्थ समाज के स्वस्थ भविष्य के लिए बेहद खतरनाक है। यह दिन प्रतिदिन उत्पन्न होती चुनौतियां तथा भेदभाव को नष्ट करने की दिशा में "युगांतर- सामाजक-राजनैतक अभयान" पहला कदम है। इसके माध्यम से युवाओं को सकारात्मक और रचनात्मक कार्य में सक्रिय कर, राष्ट्र निर्माण तथा सामाजिक निर्माण की दिशामें प्रयास किया जाएगा। इस कार्यक्रम के द्वारा शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के युवा वर्ष के ३६५ घंटे समाज को अर्पण करेंगे और इसके माध्यम से अंत्योदय और ग्रामोदय के लिए प्रयास करेंगे।

'डॉ. कलाम अर्बन फेलोशिप' के माध्यम से १०० युवा, ५० टीमें बनाकर शहरी झुग्गियों को गोद लेंगे और उत्थान के लिए प्रतिदिन एक घंटे समय का योगदान देंगे। इसी प्रकार 'स्वामी विवेकानंद रूरल फेलोशिप' के माध्यम से १०० युवा अपने जिले के ५० अविकसित गांवों को गोद लेने के लिए ५० टीमों का गठन करेंगे और प्रत्येक रविवार को उस गांव के समग्र विकास के लिए सात घंटे समर्पित करेंगे।

समन्वय विद्यापीठ

अनेकसंशयोच्छेदि परोक्षार्थस्य दर्शकम्।
सर्वस्य लोचनं शास्त्रं यस्य नास्त्यन्ध एव सः।।

(अनेक संशयों को दूर करनेवाला, परोक्ष वस्तु को दिखानेवाला, और सबका नेत्ररुप शास्त्र जिस ने पढा नहि, वह इन्सान -आँख होने के बावजुद- अंधा है।)

नई शिक्षा नीति अभी विचार-विमर्श के चरण में है। कोविड काल में शिक्षा व्यवस्था के साथ ऑनलाइन-ऑफलाइन जैसे कई प्रयोग किए गए। लेकिन क्या आज के छात्र सुसज्जित और सीखने में सक्षम है? क्या सीखना है? क्या पढ़ना है? क्यों पढ़ें? और पढ़ाई कैसे करें? ऐसे कई सवाल अभी भी सही जवाब की तलाश में हैं।

मौजूदा हालात में छात्रों की सीखने की क्षमता को बढ़ाना हमारा सबसे महत्वपूर्ण विषय है तथा महत्वपूर्ण जिम्मेदारी भी है। वैदिक गणित, शतावधानी जैसे अनेक शास्त्र विद्यार्थियों की शिक्षा को सहज बनाते है। एक तरफ भारत की ये प्राचीन विद्या तथा परंपरा है तथा वहीं दूसरी ओर मैकाले द्वारा नष्ट की गई गुरु शिष्य परंपरा, जिसने समस्त भारतीय शिक्षा पद्धति को हानि पहुंचाई, अब वो मेंटरशिप के रूप में हमारे सामने पुनर्जीवित हो रही है।

ऐसे समय में “समन्वय विद्यापीठ” के माध्यम से गुरुकुल परंपरा जैसे पौराणिक प्रयोग को प्रासंगिक स्वरूप प्रदान कर पारंपरिक भारतीय शिक्षण पद्धति और आधुनिक विषयों का समन्वय कर, परंपरा तथा आधुनिकता के सामंजस्य की एक शुभ शुरुआत करने का एक विनम्र प्रयास है।

समन्वय शोध संस्थान

विज्ञानेनात्मानं सम्पादयेत
-चाणक्य

(आइए विशेष ज्ञान के माध्यम से स्वयं का उद्धार करें। -चाणक्य)

जब दुनिया आज विज्ञान और प्रौद्योगिकी के माध्यम से प्रगति कर रही है और नए आविष्कार और प्रौद्योगिकियां वर्चुअलाइजेशन को आसान बना रही हैं, तब क्या यह तकनीकी ज्ञान वास्तव में टिकाऊ एवं पर्यावरण के अनुकूल है या नहीं, यह एक ज्वलंत प्रश्न है।

“समन्वय शोध संस्थान” अनुसंधान को प्राथमिकता देने का एक प्रयास है जिसके माध्यम से प्रौद्योगिकी और पर्यावरण में सामंजस्य स्थापित होगा। आजकल अनुसंधान ज्यादातर API (अकादमिक प्रगति सूचकांक), यानी अकादमिक विकास के संकेत के रूप में सीमित रह गया है। इस वजह से ऐसे कई विषय और क्षेत्र हैं जहां वास्तव में अनुसंधान की अपार संभावनाओं के बावजूद, इन विषयों पर अभी तक कोई ठोस शोध नहीं हुआ, क्योंकि API के दृष्टिकोण से ये क्षेत्र वर्तमान में उतने उपयोगी नहीं है।

समन्वय शोध संस्थान के माध्यम से ऐसे अस्पष्टीकृत विषयों पर अनुसंधान को प्रोत्साहित करने का प्रयास किया जाएगा। उदाहरण के लिए: वर्षों पहले बनाई गई मूर्तियां कोई विशेष तकनीक के बिना तो बनी नहीं होगी? विशाल महलों का निर्माण हजारों वर्षों से बरकरार है, जबकि आज की उन्नत तकनीक और संसाधनों से बनी इमारतों का जीवनकाल केवल कुछ वर्षों का होता है। ये विचार तथा शोध का विषय है की उस काल में ऐसी कौन सी विद्या तथा तकनीक थी जिसके कारण ये इमारतें इतने लंबे वर्ष तक मज़बूत खड़ी रहीं। यदि इन विषयों पर शोध हो तो निश्चीत ही वर्तमान में कुछ बेहद उपयोगी तथ्य सामने आएंगे।

समन्वय

अन्नपूर्णा मंदिर

अन्नपूर्णा मंदिर

"यदि आप सौ लोगों को नहीं खिला सकते हैं, तो केवल एक को खिलाएं।" - मदर टेरेसाठीक ही कहा गया है कि भूखे को खाना खिलाना मुर्दों को जिंदा करने से बड़ा काम है। जिन लोगों को इसकी कमी है, उन्हें पोषण प्रदान करने में सक्षम होना एक इंसान के रूप में प्राप्त होने वाला सबसे बड़ा आशीर्वाद है। यदि आप सक्षम हैं और यदि आप इसे करते हैं, तो आपने अपने जीवन का लक्ष्य प्राप्त कर लिया है। भूखे को भोजन उपलब्ध कराना एक ऐसा लक्ष्य है जिसे समन्वय विनम्रतापूर्वक पूरा करने की आकांक्षा रखता है। अन्नपूर्णा मंदिर मां अन्नपूर्णा को एक श्रद्धांजलि है - वह देवी जो हमारे मुंह में पानी भरती है और हमारे जीवन का निर्वाह करती है। अन्नपूर्णा भोजन और रसोई की देवी हैं, जिसमें "अन्ना" का अर्थ भोजन और "पूर्ण" का अर्थ है "पूरी तरह से भरा हुआ।" जैसा कि नाम से ही पता चलता है, अन्नपूर्णा मंदिर, या "भोजन का मंदिर", बुजुर्गों, विकलांगों और ज़रूरतमंदों को भोजन प्रदान करेगा। यह विभिन्न कार्यों और पहलों के माध्यम से भूख को संतुष्ट करना चाहता है, जिनमें से एक बुजुर्ग लोगों के लिए टिफिन सेवा है। ऐसा माना जाता है कि जब भोजन को पवित्रता की भावना से पकाया जाता है, तो वह पवित्र हो जाता है क्योंकि देवी अन्नपूर्णा उसे आशीर्वाद देती हैं। यह पहल मानवता के सबसे बड़े आशीर्वादों में से एक - भोजन - को उन लोगों तक पहुंचाने का हमारा विनम्र प्रयास होगा, जिन्हें इसकी सख्त जरूरत है।

समन्वय

समन्वय परिवार

समन्वय परिवार

एक मानवीय संबंध सबसे बड़ी स्वर्गीय घटना है, एक दिव्य उपहार है। एक परिवार होना एक ऐसी चीज है जिसकी हम इच्छा करते हैं। परिवार वह सामाजिक संस्था है जो लोगों को आपस में जोड़ती है। सामाजिक विकास में परिवारों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है क्योंकि वे समाज के मूलभूत और महत्वपूर्ण निर्माण खंड हैं। वे मुख्य रूप से बच्चों की शिक्षा और समाजीकरण के साथ-साथ समाज में नागरिकता और अपनेपन के सिद्धांतों के शिक्षण के लिए जिम्मेदार हैं। इस प्रकार, समन्वय परिवार बेघर व्यक्तियों के बीच सामाजिक विकास और अपनेपन को वास्तविक बनाने के लिए एक सामंजस्यपूर्ण समुदाय बनाने वाले तत्वों को एक साथ लाने का एक विनम्र प्रयास है। जिन नागरिकों को उनके परिवार द्वारा त्याग दिया गया है या जो पूरी तरह से अलग हो गए हैं उन्हें एक शरण सह परिवार दिया जाएगा। समन्वय परिवार का लक्ष्य ऐसे सभी वृद्ध माता-पिता, जो घर से दूर हैं, विधवाओं या महिलाओं को जो परिवार से अलग हैं, मानसिक रूप से मंद और शारीरिक रूप से विकलांग व्यक्तियों, और आवारा बच्चों के लिए ऐसे टाउनशिप, गांव या घरों की स्थापना करना है। घर के इन प्राप्तकर्ताओं को छोटे-छोटे काम के अवसरों के माध्यम से आत्मनिर्भर और निरंतर बनाया जाएगा, जो समनवे उन्हें प्रदान करना चाहता है।

समन्वय समुह लग्न

समन्वय समुह लग्न

सामूहिक विवाह उन सौम्य क्रियाओं में से एक है जो आत्मा को उच्च स्तर की उपलब्धि तक ले जाती है। यह मन को स्थिर करता है और आत्मा को शुद्ध करता है। मानव जाति को प्रबुद्ध करने और अधिक अच्छे के लिए एक मील का पत्थर बनाने के इन निस्वार्थ उद्देश्यों के साथ, समन्वय समूह एक विनम्र पहल है और समाज को समृद्ध बनाने की दिशा में एक महान अवसर है। सामूहिक विवाह न केवल विवाहित जोड़े के परिवारों के लिए बल्कि राष्ट्र के लिए भी फायदेमंद हैं, वे न केवल प्रशंसनीय हैं, बल्कि अन्य सभी के लिए प्रेरणादायी भी हैं। समन्वय समूहन उन लोगों के लिए सामूहिक विवाह करेगा जो आर्थिक रूप से कमजोर हैं और उन माता-पिता के लिए जो किसी भी तरह से अपनी बेटियों और बेटों की शादी करने में विफल रहते हैं। यह सामूहिक विवाह प्रत्येक वर्ष देव दीपावली के पावन अवसर पर किया जाएगा। समन्वय न केवल जरूरतमंदों की शादी का वादा करता है बल्कि यह भी सुनिश्चित करता है कि भविष्य के संबंध आने वाले वर्षों तक बने रहें ताकि हमारी बेटियों और बेटों के लिए एक सार्थक और सफल वैवाहिक जीवन के लिए उचित मदद और सहायता प्रदान की जा सके। समन्वय अपनी देखरेख में विवाहित जोड़े के विवादों को निपटाने की जिम्मेदारी लेगा। इन नेक कार्यों के दायरे में आने के साथ, समन्वय समूह भी राष्ट्रीय प्रगति में योगदान करने की इच्छा रखता है। क्योंकि इतनी बड़ी संख्या में जोड़े ऐसे समय में शादी कर रहे हैं जब कम तनाव, प्रयास, समय की बचत, और उत्पादन, बिजली और खाद्य अर्थव्यवस्था के नुकसान की रोकथाम है, युगल के परिवारों के लिए न केवल प्रत्यक्ष लाभ और बचत हैं, बल्कि राष्ट्र के लिए महत्वपूर्ण आर्थिक लाभ भी।

समन्वय

एकात्मभवन

एकात्मभवन

इस परियोजना के तहत समन्वय प्रतिष्ठान का मिशन प्रभावित क्षेत्रों से महिलाओं, बच्चों और पीड़ितों को एकीकृत और शिक्षित करना है, और उन्हें यह बताना है कि वे भारत का हिस्सा हैं और राष्ट्र उनकी परवाह करता है, लोगों से योग्य उदाहरण तैयार करें और उन्हें अवसर दें और पर्यावरण जिसके वे हकदार हैं।

"एकात्मभवन" (एकीकरण घर) उसी विचार को प्राप्त करने का प्रयास करता है जहां हम नक्सली प्रभावित क्षेत्रों से लोगों को एकीकृत और बसाने की उम्मीद करते हैं, उन्हें वड़ोदरा लाते हैं और उन्हें आवास, शिक्षा और जागरूकता प्रदान करते हैं जिससे उनके और उनके लिए बेहतर भविष्य हो सके। राष्ट्र। एकीकरण का विचार अभ्यास के लिए काफी तत्काल है क्योंकि अक्सर नक्सल समस्याओं के मामले में यह होता है कि वे मनोवैज्ञानिक और भौगोलिक रूप से अलग-थलग महसूस करते हैं और शिक्षा जागरूकता को समृद्ध करने का सबसे अच्छा माध्यम है और इस तरह के कदम प्रभावित क्षेत्रों के बीच अंतराल को भरने के मामले में सकारात्मक साबित होंगे। और राष्ट्र, साथ ही इस तथ्य को प्रदर्शित करता है कि भारत देश के प्रत्येक नागरिक की परवाह करता है और यह सुनिश्चित करने के लिए किसी भी हद तक जाएगा कि देश के प्रत्येक नागरिक को मानवीय सम्मान के साथ जीने का मौका मिले जैसा कि हमारे संविधान ने सुझाव दिया है।

इस पहल के तहत, एक एकीकृत घर का निर्माण किया जाएगा जहां सम्मानित लाभार्थी निवास कर सकते हैं और समानांतर रूप से बिना तनाव के अध्ययन और काम कर सकते हैं। उनकी शिक्षा को प्रायोजित करने और उन्हें कम से कम न्यूनतम भरण-पोषण वजीफा प्रदान करने के प्रयास किए जाएंगे।